

डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य

जन्म तिथि : 15 अक्टूबर 1951

निवास : राम लखन महतो रोड, पुराना जक्कनपुर, पटना–1

सिच्छा : एम.ए. (हिन्दी), पी-एच.डी.

सम्प्रति : अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, पी. एन. के. कॉलेज, अछुआ, पालीगंज, पटना

परकासित पुस्तक :

1. पाँड़ेजी के पतरा (मगही नाटक)
2. प्रेम अइसने होवऽ हे (मगही नाटक)
3. सतरंग (मगही एकांकी संकलन)
4. ठकमुरकी लग गेल (मगही कहानी संकलन)
5. लवकुश चालीसा (हिन्दी काव्य)

सम्पादित पुस्तक :

6. मगही कथा सरोवर
7. मगही एकांकी सरिता
8. मगही समसामयिक कहानी
9. लघुकथा छतीसी

पत्रिका सम्पादन :

10. मगही पत्रिका 'पाटलि' (8 अंक)
11. मगही पत्रिका 'अलका मागधी' (नियमित रूप से लगातार बारह बरिस तक परकासित । (144 अंक अबतक) आगे भी परकासन जारी हे ।

पुरस्कार-सम्मान—

1. बिहार सरकार, राजभाषा विभाग से 'मोहनलाल महतो वियोगी पुरस्कार' से सम्मानित।
2. मगही अकादमी, गया द्वारा 'डॉ० राम प्रसाद सिंह साहित्य पुरस्कार 1997'।
3. भारतीय दलित साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा 'डॉ० अम्बेडकर फेलोशिप अवार्ड 1999'।
4. अखिल भारतीय भाषा साहित्य सम्मेलन द्वारा 'साहित्य श्री' सम्मान।

ई निबंध में अप्पन मातृभासा के महातम बतावल गेल हे। मातृभासा अदमी के अइसन पहचान हे, जेकरा बोलतहीं लोग जान जाहे कि ऊ कहाँ के हथ। एकरा में देस-विदेस के विभिन्न भासा-भासी लोग के उदाहरन देके बतावल गेल हे कि उनके जइसन मगहियन के भी अप्पन मातृभासा मगही से लगाव होवे के चाही।

मातृभासा के महातम

ठीके कहल जाहे कि दुनिया में कोई भी भासा अपने आप में न तो नीमन होवऽ हे न बाउर। ऊ तो बोलेवला पर निर्भर हे। हरेक अदमी के अप्पन भासा मधुर आउ प्रिय लगऽ हे, जबकि दोसर भासा कर्कस आउ अप्रिय। एही कारन हे कि बोलेवला हर बेकती के अप्पन मातृभासा से बहुत लगाव होवऽ हे आउ दोसर भासा के मुकाबला में ऊ अप्पन भासा के आदर भी बेसी करऽ हे।

ई बात ठीक भी हे। अगर कोई भासा के आदर, सम्मान आउ ओकर उचित स्थान ओकरा बोलेवला बेकती न देत, तब का दोसर भासा-भासी देतन ? दुनिया में हर समझदार अदमी अप्पन मातृभूमि आउ मातृभासा के उचित सम्मान आउ स्थान दिलावे ला प्रयत्नसील रहऽ हे। एही कोसिस से भरल भावना के रास्ट्रीय भावना कहल जाहे।

कोई साम्राज्यवादी देस जब कोई दोसर देस पर अप्पन साम्राज्य स्थापित करेला चाहऽ हे, तब सबसे पहिले ऊ अधीनस्थ देस के सभ्यता, संस्कृति आउ धरम पर परहार करके अपना जइसन बनावे के कोसिस करऽ हे। बाकि अइसन करे में ओकरा तबतक सफलता न मिले, जबतक कि ऊ अधीनस्थ देस के भासा पर अधिकार न कर लेवे। ठीक एकर विपरीत रास्ट्रप्रेमी आउ देसभक्त लोग अप्पन भासा

के साहित्य के बचा के रक्खऽ हथ, काहे कि अगर ई बच जायत तब एकरे माध्यम से अप्पन सभ्यता आउ संस्कृति के सुरक्षित रक्खल जा सके हे।

हमनी के भारत देस में जब अँगरेज अयलन हल तब ऊ लोग भी अप्पन अंगरेजी भासा के परचार खूब कयलन। इहाँ तक कि कानून बना देलन कि जे अंगरेजी जानतन उनके सरकारी नोकरी मिलत। एकर उल्टा अजादी के संग्राम के दौरान क्रान्तिकारी लोग अंगरेजी के बहिस्कार करइत गुप्त पत्राचार हिन्दी में करके देस के एक सूता में बाँधे के कोसिस कयलन आउ ओकरा में सफलता भी मिलल।

आज देस अजाद हो गेल हे, बाकि भासा के गुलामी आजो बनल हे। देस के रास्ट्रभासा हिन्दी के अलावे हर प्रांत में किसिम-किसिम के भासा बोलल जाहे। बाकि आजो लोग अप्पन मातृभासा आउ रास्ट्रभासा के बजाय अंगरेजी बोले में अपना के बेसी गौरवान्वित समझऽ हथ। जब हमनी अंगरेज के गुलाम हली, तब लोग के दिमाग में ई बात हल कि मालिक के भासा होवे से अंगरेजी गुलाम भारत के कोई भासा के मुकाबले जरूर श्रेस्ठ होयत। बाकि अजादी के साठ बरिस के बाद आजो ओही सोचना बड़का भूल न हे, तऽ आउ का हे ?

अब समय आ गेल हे जब राष्ट्रभासा के रूप में हिन्दी के आउ प्रान्तीय भासा के रूप में अन्य छेत्रीय भासा के उचित स्थान मिले के चाहीं। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर गौर करके देखल जाय, तब खोजला पर भी अप्पन मातृभासा आउ रास्ट्रभासा के अइसन अपमान के उदाहरन दुनिया में न मिलत जइसन भारत में होवऽ हे। मातृभासा के अपमान के बजाय ओकर सम्मान के उदाहरन बहुत मिलत। एकरा में कोई खास देस के बात न हे। छोटा से छोटा आउ बड़ा से बड़ा देस के नेता अप्पन देस के भासा के प्रति सम्मान आउ प्यार परदर्सित करऽ हथ।

दुनिया के सबसे बड़का देस सोवियत संघ के रास्ट्रपति ब्रेझनेव जब भारत में अयलन हल, तब संसद के संयुक्त सदन में अप्पन देस के भासा 'रूसी' में भासन देलन हल। उनका मालूम हलइन कि भारत में रूसी भासा समझे वला कोई न हे, तइयो ऊ अप्पन देस के भासा बोल के ओकरा गौरवपूर्ण स्थान देलन। भारत सरकार उनकर भासन के अंगरेजी में अनुवाद रेडियो पर परसारित कैलक।

बड़का देस के बाद छोटका देस के उदाहरन देखल जाय। बंगला देस के नया-नया अजादी मिलल हल। शेख मुजीबुर रहमान पाकिस्तान के जेल से रिहा होके बंगला देस लउटे के क्रम में हवाई जहाज बदले ला दिल्ली हवाई अड्डा पर उतरलन। हवाई अड्डा पर उनकर स्वागत में भारत के रास्ट्रपति वी० वी० गिरि के अंगरेजी में

भासन होयल, जबकि उनकर देस के अजाद करावे में मदद करे ला शेख मुजीबुर रहमान जे धन्यवाद देलन से अप्पन भासा 'बँगला' में। वास्तव में बंगला में भासन देके ऊ ई जाहिर कर देलन कि हम्मर नयका देस के रास्ट्रभासा बंगला होयत। अप्पन मातृभासा के प्रति लगाव के एही भावना हरेक भारतवासी में भी होवे के चाहीं।

जहाँ तक मगही भासा के प्रति लगाव के सवाल हे, तऽ एतना कहल जा सकऽ हे कि भारत के अन्य भासाभासी के मुकाबला में मगहियन लोग सबसे जादे अप्पन भासा के हीन समझऽ हथ आउ ओकरा उपेक्षा के नजर से देखऽ हथ। ढेर लोग तो मगही में बोले-बतिआवे में अपना के छोटा भी महसूस करऽ हथ। पहिले मगही भासा में पढ़े-लिखे के परम्परा न हल, ई से कुछ लोग के दिमाग में ई बात भी बइठल हे कि ई तो अनपढ़ आउ गँवार लोग के भासा हे।

ई बात के परमान हमरा तब मिलल जब हम देखली कि हम्मर एगो परम मित्र सिन्हा जी अप्पन बेटी के एक थप्पर लगा देलन। बात एतने हल कि हम सिन्हा जी के बैठक में पहुँचल हली आउ करीब एक घंटा से हँसी-मजाक करइत हली। उनकर बेटी आके एतने कहलक—'बाबूजी, मइया बोलावइत हवऽ !'

बस, बेचारी के एक थप्पड़ लगाके डाँटे लगलन–'ये क्या बोल रही हो गँवारों की भासा ? इतना नहीं कह सकती कि माँ बुला रही है।'

ऊ ढेर बात आउ बोललन, बाकि हम्मर दिमाग गरम हो गेल हल, ई से हमरा उनकर आउ भासन सुनाइये न पड़ल। संयोग से खोजइत-खोजइत हम्मर बेटी भी तुरतहीं आ गेल आउ हमरा से कह देलक—'बाबूजी, मइया बोलावइत हवऽ !'

सिन्हा जी के बेटी थप्पड़ खा के भी बिना रोयले उहँइ खड़ा होके सिन्हा जी के भासन सुनतहीं हल। हम्मर बेटी के मुँह से ओही बात सुनके ओकरा टकटक्की लगाके देखे लगल।

अब हमरा बोले के मौका मिल गेल हल–'बेटी, तोहनी दुन्नो एक्के इस्कूल के एक्के किलास में पढ़ऽ हऽ। हमरा बतावऽ तो तोहनी का–का पढ़ऽ हऽ ? अच्छा, सबसे पहिले ई बतावऽ कि कउन-कउन भासा तोहनी जानऽ हऽ ?'

हम्मर बेटी तुरंत बता देलक–'हिन्दी, मगही, अंगरेजी आउ संस्कृत।

सिन्हा जी के बेटी रुक-रुक के बोले लगल–'हिन्दी, अँगरेजी, संस्कृत आउ .....' एतना कहके ऊ सिन्हा जी के ताके लगल।

हम दुन्नो बचियन के जाय ला बोल देली। ऊ दुन्नो के चल गेला के बाद हम गम्भीर स्वर में सिन्हा जी से कहहीं देली– 'सिन्हा जी ! रास्ट्रभासा हिन्दी आउ अन्तरराष्ट्रीय भासा अँगरेजी के ज्ञान बहुत जरूरी हे। अप्पन संस्कृति के बारे में जानेला संस्कृत पढ़ना भी ठीक हे बाकि अप्पन मातृभासा मगही में बोलल खराब काहे हे ? हम्मर बेटी जे मगही के जानकारी मिला के चार भासा जानऽ हे, से तीन भासा जाने ओली तोर बेटी से जादे ज्ञानी कहलायत कि नऽ। जेकरा सुविधा होवे से पाँच, छव, आउ बेसी भासा भी पढ़ सकऽ हे, ओकरा आउ बड़का ज्ञानी कहल जायत।'

सिन्हा जी के हम्मर बात समझ में आयल कि न, ई बात तो हमरा न मालूम हे, बाकि मगहियन में ओइसन अदमी के कमी न हे। सच तो ई हे कि जउन बेकती अप्पन घर में मगही में सब बात करऽ हथ, ओहू घर से बाहर निकलतहीं हिन्दी में बोले लगऽ हथ।

दोसर भासा-भासी लोग में ई बात देखे में न आवे। पंजाबी होवथ चाहे बंगाली, दुनिया में कहीं भी दू गो एक्के भासा जानेवला भेंटा जयतन कि बस, अप्पन भासा में बतियाये लगतन।

अप्पन भासा के प्रति अइसने जुड़ाव आउ लगाव के भाव मगहियन के सोभाव में भी होवे के चाहीं। एकरे अभाव में मगही भासा के परभाव ओतना न हे जेतना आउ सब भासा के हे। एकरा ला हमनी के हमेसा कोसिस करते रहे पड़त।

कोई भी भासा के प्रयोग न होवे से ऊ मृतप्राय हो जाहे। बोलचाल न रहे से ऊ खाली पुस्तक के भासा बनके रह जाहे। बाकि मगही के स्थिति ई कथन के ठीक उल्टा हे। काहे कि लोग के बोल-चाल में तो मगही के खूबे प्रयोग होवऽ हे, बाकि लिखा-पढ़ी में एकर प्रयोग कम होवे हे। इहाँ तक कि कोई चिट्ठी-चपाती भी मगही में लिखे के परम्परा न हे। सबसे पहिले तो हमनी के एही संकल्प करे के चाहीं कि एक मगहिया दोसर मगहिया के साथे अनिवार्य रूप से मगही भासा में पत्राचार करे।

मगही भासा के लोकप्रिय बनावेला सबसे जरूरी हे कि मगही में दैनिक अखबार निकालल जाय। जब मराठी, गुजराती, पंजाबी आउ बंगला में अखबार निकल सकऽ हे, तब मगही में छपल अखबार लोग काहे न पढ़तन ?

मगही भासा के लोकप्रिय बनावेला मगही में सिनेमा भी बने के चाहीं । सिनेमा एगो अइसन प्रभावसाली माध्यम हे कि ओकरा से दोसर भासा-भासी लोग भी परभावित हो जा हथ।

हम ई जे मगही के महातम सुनइली हे, एकर मतलब ई न हे कि हमनी मगही भासा के हिन्दी के समानान्तर खड़ा करेला चाहित ही। वास्तव में मगही भासा जेतने विकसित होयत, ओतने हिन्दी भासा भी मजबूत आउ समृद्ध होयत। विद्यापति, सूर, तुलसी, रसखान, मीरा, जायसी आउ कबीर जइसन महाकवि हिन्दी में न लिख के अप्पन रचना लोकभासा में कयलन हल। ओइसहीं मगही के रचनाकार भी मगही में रचना करके हिन्दीये के भंडार भरतन।

हमरा पूरा बिस्वास हे कि अब मगही भासा के महातम लोग के समझ में आवत आउ मगही भासा-भासी लोग अप्पन भासा के उचित स्थान दिलावेला प्रयत्न करतन। ऊ दिन भी दूर न हे, जब दोसर भासा-भासी लोग भी मगही के उचित आदर देतन।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) सोवियत संघ के रास्ट्रपति ब्रेझनेव भारत के संसद में कउन भासा में भासन देलन आउ काहे ?

   (ख) 'भासा के गुलामी आजो बनल हे'—ई बात के समझावऽ।

   (ग) लेखक के एगो परम मित्र सिन्हा जी अप्पन बेटी के एक थप्पड़ काहे लगा देलन ? उनकर ई बेयोहार से तोर दिमाग पर का असर पड़ऽ हे ?

   (घ) 'कुछ लोग कहऽ हथ कि अलग-अलग भासा के बढ़ावा से देस टूट जायत'—एकरा से तूँ कहाँ तक सहमत हऽ ?

   (ङ) पाठ के अन्त में आयल सात गो कवि के नाम बतावल गेल हे। ऊ लोग के लोक-भासा के नाम बतावऽ।

लिखित :

1. निबंधकार डॉ० अभिमन्यु प्रसाद मौर्य के परिचय संक्षेप में लिखऽ।
2. दुनिया में सबसे मधुर भासा कउन हे ?
3. क्रांतिकारी लोग गुप्त पत्राचार करके कउन बात में सफलता प्राप्त कैलन ?
4. मालिक के भासा आउ गुलाम के भासा के द्वारा कउन बात बतावे के कोसिस कैल गेल हे ?

5. ई पाठ में बड़का देस आउ छोटका देस के उदाहरन देके का कहल गेल हे ?

6. अप्पन मातृभासा के बारे में मगहियन के कइसन सोंच हे ?

7. मगही भासा के विकसित होला से हिन्दी भासा पर कइसन असर पड़त ?

8. कइएक भासा जानेवला के बीच में जादे बड़का विद्वान किनका कहल जायत ?

9. मगही भासा के प्रति कइसे जुड़ाव हो सकऽ हे ? कोई तीन गो उपाय बतावल जाय।

10. सप्रसंग व्याख्या करल जाय :—

(क) उनका मालूम हलइन कि भारत में रूसी भासा समझे वला कोई न हे, तइयो ऊ अप्पन देस के भासा बोल के ओकरा गौरवपूर्ण स्थान देलन।

(ख) अप्पन भासा के प्रति अइसने जुड़ाव आउ लगाव के भाव मगहियन के सोभाव में भी होवे के चाहीं। एकरे अभाव में मगही भासा के परभाव ओतना न हे, जेतना आउ सब भासा के हे।

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल सब्द से विसेसन बनावऽ आउ ओकरा से वाक्य वनावऽ :—
रास्ट्र, सम्मान, प्रान्त, साहित्य, दिन

2. नीचे लिखल उपसर्ग से सब्द बनावऽ :—
नी, अ, अनु, अप, पर

योग्यता-विस्तार :

1. 'मगही के महातम' पर अप्पन किलास में एगो विचार गोस्ठी रखऽ।

2. अप्पन मित्र के पास एगो पत्र लिखऽ जेकरा में मगही के महातम बतावऽ।

3. आज मगही के दुरदसा के का कारन हे ? कारन गिनावऽ।

सब्दार्थ :

नीमन	—	अच्छा
बाउर	—	खराब
सूता	—	धागा

बोले-बतिआवे	—	बातचीत करे
टकटक्की लगाके	—	लगातार ध्यान देके
ताके लगल	—	देखे लगल
भासा-भासी	—	भासा बोलेवला
जुड़ाव	—	सम्बन्ध
लगाव	—	नजदीकी
भाव	—	सम्वेदना
सोभाव	—	परकिरती / आदत
अभाव	—	कमी
परभाव	—	असर
चिट्ठी-चपाती	—	पत्र
महातम	—	महत्व

●●●





प्रभात वर्मा

जन्म-तिथि : 1.1.1957

जन्म-स्थान : ककैला, नालन्दा

निवास : न्यू कॉलोनी, हरनाहा टोला, झाउगंज, पटना सिटी

सिच्छा : बी०ए०, एल-एल-बी०

परकासित पुस्तक :

1. बिहार के ई अनमोल रतन (मगही जीवनी संग्रह)
2. विधाता के विधान (मगही कहानी संग्रह)
3. करमलेख (मगही कहानी संग्रह)
4. तमासबीन (मगही कहानी संग्रह)

सम्पादन :

1. दस्तक प्रभात (हिन्दी साप्ताहिक पत्र)—सम्पादक

प्रभात वर्मा के लिखल 'असरा' एगो आंचलिक कहानी हे जेकरा में सहर के झाँकी हे। सहर के रहन-सहन, जिनगी के भाग-दौड़ आउ सुख-दुख एकरा में चित्रित हे। ई कहानी में एगो मजूर-जिनगी के संघर्स-कथा हे। ओकर सुख-दुख पाठक के अंत तक बाँधले रहऽ हे। ई एगो आदर्सोन्मुख कहानी हे। एकरा में एगो सिच्छित बेरोजगार के पीड़ा हे जे रिक्सा चलावेला मजबूर हो जाहे। कथा अमानवीयता के उजागर करऽ हे आउ नायक के संवेदना पाठक के तिलमिला देहे, बाकि अंत सुखद हो जाहे।

असरा

सड़क पर सरपट रिक्सा के पैडिल जोर से मारते सरजुगवा अप्पन ठेकाना दन्ने भागते जा रहल हल। ओकरा आँख के आगे सोनमतिआ के चेहरा घूम रहल हल, जे ओकर असरा में बइठल आग-बबूला हो रहल होयत। ऊ सोचे लगल कि आज ढेर देरी हो गेल हे। जब भी देरी हो जाहे, सोनमतिआ तरवा के लहर कपार चढ़ाके बोलऽ हे–'देखऽ, तोर असरा में हम केतना देरी से दुआरी पर बइठल ही। खैवो सेरा गेलो हे। काम के फिराक में तोरा खाहुँ-पीहुँ के इआद न रहऽ हो, बाकि जब देहे न रहतो त कमयबऽ कउची पर।' फिर पेयार से समझइते बोलऽ हे–'अप्पन सरीर पर धेयान दऽ! तोरे पर न हमहूँ ही। देखऽ तो, दिनो-दिन दुबरायले जा रहलऽ हे।' एही सब सोचते-सोचते सरजुगवा अप्पन रिक्सा झोपड़ी भिजुन आके रोकलक।

मगर रोज नियन आज सोनमतिआ दुआरी पर नयँ मिलल। सरजुगवा रिक्सा एक दन्ने लगाके भीतर झोपड़ी में घुस गेल। देखलक कि सोनमतिआ खटिया पर मुँह झाँप के पड़ल हे। सरजुगवा समझ गेल कि आज महरानी जी जादे गोस्सा हो गेलन हे !

ऊ खटिया तर जाके सोनमतिआ के मुँह पर ढकल चद्दर हटा देलक। देखलक कि सोनमतिआ सिसक रहल हे। सरजुगवा के करेजा संका से धक-धक करे लगल, काहे कि सोनमतिआ दोसर कउनो औरत नियन झुट्ठो-फुसो रोना-धोना नयँ मचावऽ हे। आज जरूर कोय बात होयत। सरजुगवा खटिया पर बइठते परेम भाव से सोनमतिआ से पुछलक–'का बात हे ? तूँ रो रहलऽ हे ? कोय बात हो गेल हे का ?'

सोनमतिआ खटिया पर से उठते रोते-सिसकते सरजुगवा से कहे लगल–'हमरा तूँ घरे पहुँचा दऽ। हम हिआँ काहेला रहम, जब हमरा से तोरा कोय मतलबे न हो ? भोरे से गेल-गेल तीन बजे अयलऽ हे। फिर तुरते भागबऽ तऽ रात के दस बजे अयबऽ कि बारह बजे अयबऽ, कोय नयँ जानऽ हे। एतना-एतना देरी पर खयबऽ, तऽ ई सरीर के का हाल होतो ?'

एगो लोटा में पानी भरके ऊ सरजुगवा के पास लाके रखते बोलल-'हमरो तो पेट हे नऽ, भूख से पेट अइँठते रहऽ हे। तोरा खिलयले बिना हम कइसे खा लीं ? चलऽ, हाथ-गोड़ धोके खा लऽ !'

सरजुगवा सोनमतिआ के बात सुनके ठठा के हँस देलक आउ बोलल–'बस, एतने सुन बात ला तूँ खटवास-पटवास ले लेलऽ हल। हम तो समझली कि कोय भयंकर बात हो गेल हे।'

फिर सरजुगवा सोनमतिआ के समझावे लगल–'सुनऽ, हमरा ला तूँ भुक्खल मत रहल करऽ। हम तो बाहरो में कुछ न कुछ खाइये लेही। हम्मर देर-सबेर के का करबऽ, रिक्सा चलावऽ ही न ! कोनो औफिस के बाबूगिरी तो करऽ ही नयँ कि समय से आयम आउ समय से जायम। कखनी कउन सवारी कहाँ के मिल जाहे, से कउन जानऽ हे ? तूँ समय पर खा लेवल करऽ आउ हमरा ला चिंता मत करल करऽ।' फिर परेम जतइते कहलक—'देखऽ, तूँ दुबरा के नरकट जइसन होयल जा रहलऽ हे। हमरा का होयल हे? मोटायल के मोटायले ही।'

लोटा के पानी उठाके सरजुगवा झोपड़ी के बाहर चल देलक। सोनमतिआ खाना निकासे लगल। जबतक सरजुगवा खयते रहल तबतक सोनमतिआ ओकरा भिर बइठ के पंखा झलते दु:ख-सुख बतिअयते रहल। खाना खाके सरजुगवा फिरो घर से निकस गेल आउ सोनमतिआ दुआरी पर खड़ा होके ओकरा जयते देखते रहल।

सरजुगवा सड़क पर आके सवारी खोजे के फेर में लग गेल। ऊ अप्पन रिक्सा सड़क के किनारे बड़का पेड़ के छाँह में लगाके ओकरे पर बइठ गेल आउ सुस्ताय लगल। ओकर दिल-दिमाग आज घूर-फिरके सोनमतिआ पर लगल हल। सरजुगवा के इआद ताजा हो गेल। बाप-माय के मरला के बाद पहिले-पहिल ऊ अप्पन गाँव छोड़ के बदकिस्मती के मार सहते ई सहर में कउनो रोजगार के तलास में आयल हल। ई सहर में ओकर जानो-पहचान के कोय नयँ हल। नौकरी के जोगाड़ में इहाँ-उहाँ मारल चलल, बाकि सरकारी तो दूर, कल-करखाना, दर-दोकान में कोय ओकरा नयँ रखलक। ऊ जेकरा भिर जाय, ओही ओकर हाल सुनके पूछे–'इहाँ तोर जान-पहचान के कोय हे जे तोर गारंटी ले सकऽ हे कि तूँ कोय समान लेके भाग नयँ जयबऽ ?'

हार-पार के ऊ कोय छोट-मोट काम के फिराक में लग गेल, काहे कि ओकरा खाय ला भी कोय जोगाड़ नयँ हल। इहे से ऊ टीसन पर मोटरी ढोवे के काम करे लगल। दिन भर खट के कमाय, तऽ दू-चार रुपइया कमा ले हल। फुटपाथ पर लगल लिट्टी-सतुआ के दोकान में खाय आउ रात के टीसन के मोसाफिरखाना में जाके सुत रहऽ हल।

फिर एगो होटल में बरतन मइँजे आउ जुट्ठा धोवे के काम मिल गेल हल। न चाह के भी पेट खातिर ई काम ओकरा करे पड़ल। होटल के मालिक अइसन कि बात पीछू गालिये-गलौज आउ मार-पीट करऽ हल। ओकर ई बेवहार सरजुगवा के तनिक्को न सोहाय। ऊ सोचऽ हल—'हम गरीब जरूर ही, मगर पेट खातिर इज्जत तो नयँ खतम कर देम।' एक दिन होटल मालिक के बेवहार से ऊब के ऊ काम-धाम छोड़ देलक। तब ऊ का करे, कहाँ जाय ? ओकर समझ में कुच्छो न आ रहल हल। काम खोजे लागी ऊ कउन जगह न गेल, बाकि कहीं काम न मिलल।

एक दिन गाँधी मैदान के बेंच पर बइठल हल तभिये ओकरा भिर एगो अधबैस रिक्सावाला सुस्ताय के खेयाल से ओकरा पास आके बइठल। जब ऊ रिक्सावाला सरजुगवा के चिन्ता में मुरझायल चेहरा देखलक, तऽ ओकरा से पुछलक–'का बात हे बाबू ! लगऽ हे कि तूँ कोय बड़ संकट में पड़ल हऽ ।'

अधबैस उमर के रिक्सावाला सिधेसर के बात सुनके सरजुगवा के मन में आस जगल आउ बाते-बाते में ऊ अप्पन बदकिस्मती के बात सुरू से अंत तक फारे-फार सुना देलक। सिधेसर ओकर हाल जान के ढाढ़स देते कहलक–'सरजुग, ई माया के दुनिया हे आउ इहाँ तरह-तरह के लोग हथ। अप्पन सवारथ के चलते दूसरा के जान लेवे वला के भी ई दुनिया में कमी न हे। जिनगी में घबरयला से काम न चलऽ हे। दुःख से लड़े वला ही सुख के भागी बनऽ हे। तूँ चलऽ, हमरा साथे रहिहऽ !'

सिधेसर अपना बारे में सरजुगवा के बतयलक–'हम छोट जात के गरीब अदमी ही। हमरो घर इहाँ से बहुत दूर गाँवे में हे। इहाँ हम रिक्सा चलाके किराया के मकान में अप्पन बेकत आउ दूगो लइकन के साथे कोय तरह से जिनगी गुजर-बसर कर रहलं हे। अगर तोर मन करो, तऽ हमरा साथे चल सकलऽ हे। तोरो रिक्सा चलावे ला सिखा देम। जबतक तोरा खाय-पीये के कोय जोगार नयँ होवऽ हे, एकरे से कमइहऽ-खइहऽ। घबराय से जीवन नयँ चलऽ हे, हिम्मत करके दुःख के दिन काटे पड़ऽ हे।'

सरजुगवा के साथे लेके सिधेसर अप्पन डेरा पर पहुँच गेलन। घरे आके सिधेसर सरजुगवा के ओसारा पर बिछल चउकी पर बइठा के भीतर चल गेलन। कुछ देरी के बाद एगो चउदह-पन्दरह बरिस के गोल-मटोल खूब सुन्नर चेहरा-मोहरा वाली लइकी लोटा में पानी लाके ओकरा भिर रखते बोलल—'हाथ मुँह धो लेथिन।'

सरजुगवा ओकरा देखलक तऽ देखते रह गेल। ऊ सोचे लगल-'गरीबो के घर में एतना सुन्नर लड़की होवऽ हे ?'

लड़किया जब सरजुगवा के एकटक अपना दन्ने ताकते देखलक, तऽ सरमा के उहाँ से भाग गेल। एक्के बेर देखला पर सरजुगवा के मन में ऊ लइकी बस गेल हल। ओकर नाम हल सोनमतिआ। सोनमतिआ सिधेसर के बड़ बेटी हल। ऊ सतमा तक पढ़ल हल। सिलाय-कटाय-फड़ाय सब जानऽ हल। ऊ सुलछनी बेटी हल। दिन भर घर के काम के साथे बाप-माय के सेवा में ओकर दिन बीतऽ हल। जब पहिले-पहिल सोनमतिआ सरजुगवा के देखलक हल, तऽ ओकरो ऊ बहुत अच्छा लगल हल।

सिधेसर दुसरके दिन से सरजुगवा के रिक्सा चलावे ला सिखा के एगो रिक्सा भाड़ा पर दिला देलन। सोलह बरिस के हट्ठा-कट्ठा सरजुगवा के पहिले तो रिक्सा खींचे में बड़ी दिक्कत होयल, मगर समय आउ परिस्थिति ओकरा में रिक्सा खींचे के आदत डाल देलक। दिन भर रिक्सा चलाके जब सरजुगवा घरे आवऽ हल, तऽ सोनमतिआ दरवाजे पर मिल जा हल। ओकरा देखिये के ओकर दिन भर के थकान मेट जा हल। ओकरा खिलाना-पिलाना सोनमतिए के काम हल।

सिधेसर हीं सरजुगवा के रहते एक बरिस बीत गेल। सोनमतिआ आउ सरजुगबा में एक-दूसरा के परती परेम-भाव जाग गेल। दुन्नो के परेम-भाव सिधेसर आउ उनकर बेकत से छुपल नयँ रहल। एक दिन सिधेसर सरजुगवा से पुछलन- 'सरजुग, इधर देख रहली हे कि सोनमतिआ से तोर परेम-भाव बढ़ल जा रहलो हे। तूँ तो जानऽ हऽ कि हम छोट जात के अदमी ही आउ तूँ बड़का जात के लड़का हऽ। सोनमतिआ से तोर मेल कइसे हो सकऽ हे ? तइयो जमाना के लोग हमनी के इज्जत पर अंगुरी उठावे, एकरा से पहिले हम सोनमतिआ के बियाह तोरा से कर देवेला चाहऽ ही।'

सरजुगवा सिधेसर के बात सुनके बोलल–'हम सोनमतिआ के अपन दुलहिन बनाके अपन भाग्य पर खुस हो जायम। एकरा में बड़-छोट के कोय बात नयँ हे। बस, तोर आसीरवाद हमरा चाही।'

सिधेसर के मन हुलस गेल। सरजुगवा अइसन कमासुत लड़का तो पहिलहीं से पसन्द हल उनका। बस, ओकर राय भर के देरी हल। सिधेसर बियाह के तइयारी में लग गेलन। शुभ घड़ी में सोनमतिआ के बियाह सरजुगवा से हो गेल। दुन्नो एगो डोरी से बंध गेलन। बियाह के बाद सरजुगवा सोनमतिआ के साथे लेके रजिन्दर नगर में एगो झोपड़ी बनाके रहे लगल।

सरजुगवा के सोचते-सोचते केतना देरी हो गेल से ओकरा पतो नयँ चलल। ओकर सोच के लड़ी तो तब टूटल, जब एगो सूट-बूट पहिनले बाबू अप्पन औरत के साथे ओकरा भिर आके बोललन–'ए रिक्सा वाला, होटल मौर्या चलोगे ?'

सरजुगवा रिक्सा से उतरते बोलल–'हँ बाबू, चलम।' आउ दुन्नो औरत-मरद के रिक्सा पर बइठयले ऊहाँ से चल देलक। मौर्या होटल के पास पहुँच के ऊ रिक्सा रोक देलक। रिक्सा से उतर के बाबू अप्पन औरत के साथे सरजुगवा के बिना कुछ बोलले बीस रुपइया के नोट थमाके होटल में घुस गेलन। सरजुगवा मुसका के सोचे लगल—'अइसन कय बार होयल हे, जब कोय बाबू पाँच रुपइया के जगह पर दस-बीस रुपइया देके बिना कुछ बोलले चल जा हथ। बाकि कोय-कोय बाबू तो एक-दू रुपइया लागी हीला-हवाला करे के साथ-साथ गाली-गलौज भी करऽ हथ।

साँझ हो गेल हल। कम मेहनत में आज ढेर कमाई हो गेल हल, एही से सरजुगवा बहुत खुस हल। होटल के पास रिक्सा लगाके ऊ होटल में गेल औरत-मरद के असरा देखे लगल। एक घंटा असरा देखला के बाद जइसहीं ऊ रिक्सा बढ़यलक हल कि दुन्नो औरत-मरद होटल से निकल के ओकरा रिक्सा रोके ला इसारा कयलन। सरजुगवा ठहर गेल। दुन्नो औरत-मरद रिक्सा पर आके बइठ गेलन आउ बोललन–'वहीं चलो जहाँ से हमलोगों को लाये हो।'

रिक्सा पर बइठल बाबू सरजुगवा के चाल-ढाल आउ सुन्नर काया देख के पुछलन–'तुम पढ़े-लिखे लगते हो।'

'जी हँऽ, मैट्रिक तक पढ़ल ही बाबू !' रिक्सा के घंटी टनटनइते सरजुगवा बोललक।'

'तो तुम कहीं नौकरी क्यों नहीं करते ?' बाबू पुछलन।

'नौकरी, गरीब के नौकरी कउन देतइ बाबू ?' सरजुगवा कुपित होके बोललक-'नौकरी के तलास तो बहुत कइली, बाकि न मिलल। थक-हार के रिक्सा चलावे पड़ रहल हे।'

सरजुगवा के बात सुनके दुन्नो औरत-मरद आपस में ओकरे बारे में बतिआय लगलन। ठेकाना पर आके सरजुगवा रिक्सा रोक देलक। रिक्सा से उतरते बाबू सरजुगवा के हाथ में फिर बीस रुपइया के नोट आउ एगो 'विजिटिंग कार्ड' देते बोललन—'देखो, इस क़ार्ड पर हमारी कम्पनी का पता लिखा हुआ है। तुम कल

इसी पते पर आकर हमसे मिलना। हम तुमको नौकरी दिलवा देंगे।' एतना कहके बाबू औरत के साथे आगे बढ़ गेलन। सरजुगवा बड़ी देरी तकले हाथ के पइसा आउ पता वाला कार्ड देखते रहल। ऊ आज बहुत खुस हल।

रात खानी अप्पन झोपड़ी में लउट के सोनमतिआ के हाथ में दिन भर के कमाई थमइते कहलक–'लगऽ हो कि दुःख के दिन अब बिसरे वाला हो।' सोनमतिआ भी जादे पइसा देख के हुलस रहल हल।

दुसरका दिन सरजुगवा कार्ड में लिखल कंपनी के ऑफिस के पता पूछते-पाछते बाबू भिर जा पहुँचल। बाबू ओकरा देखते कुर्सी पर बइठ के नौकरी ला दरखास लिखेगा कहलन। जब सरजुगवा दरखास लिख देलक तऽ बाबू ओकरा अप्पन ऑफिस के चपरासी बहाल कर लेलन।

ई खुसखबरी जब सोनमतिआ सुनलक तऽ बहुते खुस होयल आउ सोचे लगल-'इनकर कोय बहाना अब हमरा भिर नयँ चलत।' सरजुगवो खुस हल, काहे कि जीवन में दुःख भोगे घड़ी सुख के जे असरा ऊ लगयलक हल, विधाता के बनावल विधान में ओकर असरा अब पूरा हो गेल हल।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कहानी के सीर्सक 'असरा' काहे रखल गेल हे ? तर्क देके बतावऽ।

   (ख) सोनमतिआ सरीर पर धेयान देवेला काहे कहलक ?

   (ग) सहर में अयला पर सरजुगवा कउन-कउन काम कयलक आउ काहे ?

   (घ) 'विधाता के बनावल विधान' कउन बात के संकेत करऽ हे ? का ओकरा तूँ सही मानऽ ह ?

   (ङ) कहानी के नायिका कउन हे ? ओकर चरित्र के पाँच गो बिसेसता बतावऽ।

लिखित :

1. कहानीकार प्रभात वर्मा के चार पंक्ति में परिचय दऽ।
2. कहानी के तत्व बतावैइत 'असरा' कहानी के कसउटी पर कसऽ ।
3. कहानी के नायक कउन हे ? ओकर चरित्र-चित्रन करऽ ।
4. सोनमतिआ सरजुगवा के जीवन में आके कउन परिवर्तन ला देलक ?
5. सरजुगवा गाँव छोड़ के सहर में काहे ला आयल ?
6. सरजुगवा सहर में आके रिक्सा काहे चलावे लगल ?
7. सरजुगवा आउ सोनमतिया के बीच परेम कइसे भेल ? ऊ स्थिति के बरनन करऽ ।
8. सरजुगवा के नौकरी कइसे मिलल ?

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करऽ :—
   (क) तरवा के लहर कपार पर चढ़ना
   (ख) ठठा के हँसना
2. पाठ से पाँच गो सरल वाक्य चुनके लिखऽ ।

योग्यता-विस्तार :

1. रिक्सा चालक के कठिन जीवन देख के तोर मनोदसा पर का परभाव पड़ल ?
2. परिश्रम पर एगो छोटा निबंध लिखऽ।

सब्दार्थ :

सरपट	—	तेज
खयको	—	बुतात / भोजन
सेरा गेल	—	ठंढा हो गेल
भिजुन	—	नगीच
भुट्ठो–फुसो	—	झूठमूठ
कोय	—	कोई

सुस्ताय लगल	—	अराम करे लगल
तलास	—	खोज
जोंगाड़	—	उपाय
न सोहाय	—	अच्छा न लगे
अधबैस	—	अधेड़ उमर के
बदकिस्मती	—	खराब भाग्य
साहस	—	हिम्मत
सुलछनी	—	अच्छा लक्षन वाली
हट्ठा-कट्ठा	—	मजबूत सरीर के
कमासुत	—	कमाय वाला
अन्नरा	—	आसा
विधाता	—	भाग्य निर्माता
विधान	—	नियम-कानून

•••





शेखर

जनम : 22 जुलाई 1952
स्थान : जयमंगला (शेखपुरा)

शेखर राष्ट्रीय ख्याति के कहानीकार हथ । ई हिन्दी आउ मगही दुन्नो भासा में लिखऽ हथ। ई मगही आन्दोलन के एगो मसहूर कार्यकर्त्ता भी हथ।

ई कहानी के जरिए अप्पन देस के प्रति भक्ति, बलिदान आउ अप्पन सबकुछ निछावर करे के संदेस देवल गेल हे। आंचलिक कहानी का होवऽ हे, ई पाठ से समझ में आ जाहे । साम्प्रदायिक सद्भाव पर अधारित ई कहानी गंगा-जमुनी संसकिरती के नीमन नमूना हे। ई कहानी देस के प्रति नारी के तेयाग आउ बलिदान के अद्भुत उदाहरन हे।

मोरचा

ऊ हमरा सँकरी के कछार पर मिललइ हल, जब भखरा के पहाड़ पर चुक्को-मुक्को बइठल संझउआ सुरुज सुतगामा के जंगल में घुरमुरिया मार के साहस जुटा रहलइ हल आउ लाज से रुत-रुत ओकर गाल से झरइत कुमकुमी जोत ओकर पसेना से चपचपायल चेहरा के सिनुरिया आम आउ ओकर चोली वला उठान के केला के फूल वला सौरभ दे रहलइ हल।

नदी के भयावन भरकोसा बलुआ पाट पार करि के थकान, लगेदम चलते जाय के ओकर साहस छीन लेलकइ हल आउ नयँ चाहला के बाद भी हाँफइत आके ऊ महुआ के जड़ के पास हमरा बगल में, पीछू भार दुन्नो हाथ के टेक लेवइत पाँव पसार के दीदारगंज के यक्षनी सन बइठ रहलइ हल। लमहर-लमहर साँस भरइत ओकर छाती उठ-बइठ रहलइ हल। ओकर देह एगो खास लय में ऊपर-नीचू डोल रहलइ हल।

हौलै से चेहरा हमरा दन्ने करि के कनखी से ऊ दू बार हम्मर मुँह ताकलकइ हल। ओकर मन में कोय बात आ आउ जा रहलइ हल। साइत कोय बात ऊ हमरा

से कहे इया पूछे ला चाहऽ हलइ, मुदा एगो खास तरह के जनाना संकोच हलइ जे ओकर ठोर के अजदह बनइले हलइ।

एकर ई हाल पर हमरा हँसी आ गेलइ हल। पहिले धीरे से, फिन हम ठठाके हँसि पड़लिये हल। चउँक के ऊ हम्मर मुँह ताके लगलइ, फिन विहँस के पुछलकइ —'काहे, की बात हइ ?'

'ईहे कि ढेर देरी से तूँ कुछ पूछेला चाह रहलहो हे, मुदा बात हो कि अंदरे घुमरि के फुस्स !'

'इस्स ! ...दइया गे, तूँ तो नजूमी नियर बात करऽ हो जी, कहाँ घर हो ?—बायाँ हाथ पर गाल रखि के ऊ एगो खास अंदाज में मुसकइत पुछलकइ।

ओकर सवाल से अचक्के हम्मर मन उदास हो उठलइ हल आउ ठोर बिचकावइत कोय संन्यासी के अंदाज में हम्मर मुँह से निकलि गेलइ हल—'बस, जहाँ धर, उहइँ घर ! कभी केकरो घर, कभी होटल इया धरमसाला इया कोय गेस्ट हाउस इया कोय इयार-दोस्त के घर में डेरा। अप्पन कहेवला कोय ठेकाना नयँ !'

'सच्चो ! मुदा अइसन काहे ?' ऊ हैरत से हम्मर मुँह ताके लगलइ हल।

'अदमी के पापी मन दुनिया भरके माल मारि लेवेला चाहऽ हइ। ई पापी स्वारथ में अदमी अइसन आन्हर हो जा हइ कि अप्पन आउ पराया के सब भेद भुला के नेह-नाता के सब संबंध तोड़ के प्रेत आउ राकस बनि जा हइ। ई तरह अदमी के राकस बने के कारन महाभारत होलइ। अभी हिंदुस्तान-पाकिस्तान के जुद्ध ! ईहे जुद्ध के जे कारन हइ, उहे हमरा फुटपाथ पर ला देलकइ हे आज, बना देलकइ हे बेघर, बेपता !

'काहे ?' ऊ हैरत से हम्मर मुँह ताकइत बात समझे के कोसिस कर रहलइ हल।

'ई लेल कि हमरा जुद्ध से नफरत हइ ! हम जानऽ हियइ जुद्ध के परिनाम ! महाभारत में दुन्नो खतम हो गेलइ। अगर पांडव के हक नञ् मारतइ हल, तऽ होतइ हल महाभारत ? ईहे से तो आन्हर स्वारथ से हमरा नफरत हइ। आउ स्वारथ से नफरत रखे वला अदमी के घर कहाँ ?'

'अच्छा, तऽ ई बात हइ !' चुलबुल अंदाज में बिहँसि के पुछलकइ **हल ऊ** — 'मुदा जात, कउन जात के हहो ?'

'देखि तो रहलहो हे, मरद हिए कि एकरो में संदेह हो ?'

ऊ खिलखिला पड़लइ हल—'से तो ठीक, मुदा जनम वला जात।'

'ओ, ऊ ? तऽ हिंदू-मुसलमान-सिक्ख-इसाई – सब ।'

'अच्छा ठीक हो, मत बतावऽ! मुदा एन्ने, एन्ने कहाँ ?' ऊ आजिज आके पुछलकइ हल।

'एन्ने सतगामा के जंगल में गरीब आदिवासी के बीच ओकर लोक परंपरा पर किताब लिखेला खोज करि रहलिए हे, आउ कुछ ?'

आउ हम्मर मुँह ताकइत ऊ गंभीर हो गेलइ हल, फिन नीचू ताकइत जमीन खुरचे लगलइ हल अंगुरी से। अचक्के मुँह उठा के फिन पुछलकइ हल—'आउ अभी, अभी कहाँ जा रहलहो हे ?'

काहे ? अभी तो गोविंदपुर जा रहलिए 'हे ! आउ तूँ ?' हम ओकर मुँह देखे लगलिए हल।

हम्मर सवाल जइसे सवाल नयँ, बिजली के करंट रहे, ओकर रोम-रोम झनझना उठलइ हल। हमरा भिर बइठ के बातचीत में ऊ भूलि गेलइ हल कि ऊ के हइ, तीन दिन से रात-दिन कउन पीड़ा में घुटल करऽ हलइ आउ की सोंचि के काहे ला घर से निकललइ हल।

हम्मर सवाल जइसे उठाके ओकरा उहे माहौल में जा पटकलइ हल, जेह में हर तरफ से ठूल आउ ताना आंकर अतमा के मथि के धर देलकइ हल।

परसूँ ओकर भाय के चिट्ठी कारगिल मोरचा से अइलइ हल। कानोकान खबर मिलते मातर करीम के घर में जन्नी-मरद के अइसन हुजूम उमड़लइ कि कहईं तिल धरे के जगह नयँ। ऊ भी दउड़ल गेलइ आउ भउजाय के बगल में जा खड़ी होलइ हल।

करीम के जोरू के हाथ से चिट्ठी ले के रमेसर पाँड़े फाड़ि के पढ़े लगलन हल। सब कान लगा के सुने लगलइ हल।

'अम्मी, अब्बा आउ समीना के अस्सलाम अलइकुम !... आगे सब समाचार ठीक हइ। हम मई के अंतिम हफ्ता में दुसमन के मारि भगावे ला कारगिल मोरचा पर पहुँच गेलिअइ हल आउ काली पगड़ी वाला के दुआ से गोरखा, नागा, गढ़वाल आउ हमनी बिहार रेजीमेंट के साथी सब तीन तरफ से अप्पन ढेरो साथी से बिछुड़इत आउ दुस्मन के पथार लगावइत टाइगर चोटी पर अप्पन झंडा फहरा के फतह हासिल करि

लेलिए हे। मुदा ई खुसी के दौर में भी हमरा एक्के बात घाव सन दुखइत रहऽ हइ कि परवेज हमरा साथे नयँ हथिन। मोरचा के नामे से हुनखा हद्दस समा गेलइ आउ श्रीनगर छावनी अस्पताल में भर्ती हो गेलन। हम नयँ समझऽ हलिए कि हम्मर बहनोइ एत्ते कायर होतइ।'

आउ तखने से लोग ओकरा ताना मारे लगलइ हल—'तऽ, रेसमा के सइयाँ डरफोंकवा ! गे दइया, सब तो लड़ि रहलइ हल आउ एगो ई जनाब हइ कि खटिया पर टॉनिक पी रहलइ हे, छी ! हमनी तो अइसन के सट्टे ला नयँ दिअइ।'

तीन दिन से लगातार जन्ने जाय तन्ने अइसने ठूल, ताना, सुनइत-सुनइत ओकर देह में सल्ले-सल्ले आँधी धधके लगलइ आउ आज दुपहर होते पइसा निकालि के छूटल तीर सन घर से निकलि पड़लइ हल। ऊ इहो नयँ सोचलकइ कि गोविन्दपुर पहुँचते-पहुँचते साँझ हो जइतइ। हरिन मता देवेवला बीच दुपहरिया में परवेज से फोन पर बतियावे ला ऊ घर से निकसि गेलइ आउ चलते-चलते परेसान, भरकोसा पाट ओली सँकरी नदी पार करइत-करइत तो जइसे झुलसि के मातल, कछार के महुआ गाछ तर झमा के बइठलइ हल। एक भाव आवइत आउ एक भाव जाइत ओकर चेहरा हवा के झकोर से लहरी दर लहरी उठइत कोय तलाव के जल सतह सन हो उठलइ हल। ओकर आँखि कभी गोस्सा आउ नफरत से जलि के सिकुड़ि उठऽ हलइ तऽ कभी बदराल अकास सन चुचुआल।

फिन हम तनि दम मार के टोकि देलियइ हल—'की बात हइ, तूँ बोललहो नयँ ?'

ऊ जइसे सुतल से अचक्के जागि गेल रहे, लजा के बोललइ—'की बतइयो हम अप्पन मरद के फोन करे जा रहलिए हे। सब्भे जवान सरहद पर दुसमन से लड़ि रहलइ हे, मुदा एगो हम्मर मरद हइ कि देहजरुआ हद्दस से बहाना बनाके श्रीनगर सैनिक अस्पताल में बेमार पड़ल हइ। आउ इहाँ के लोग हइ कि उठइत-बइठइत ताना दे-दे के हमरा राहो चलना मोसकिल करि देलक हे ! इहे से ई हिजड़ा मरद से...' कहइत-कहइत अँचरा में मुँह लेके ऊ हिचकी भरइत रोवे लगलइ हल। हमरा काटऽ तऽ खून नयँ।

जीवन में कत्तेक तरह के लोग से अबतक कत्तेक बार वास्ता पड़लइ हे। मगर पचीस-छब्बीस साल के ई गँवइ औरत के जे आहत स्वाभिमान से आज दरसन भेलइ, से आज के ई मतलबी जुग में साइत दुरलभ हइ। अचरज आउ सरधा से हम

ओकर मुँह ताके लगलिए हल। खूब ढाढ़स देके हम आदर के साथ ओकरा गोविंदपुर तारघर ले गेलिए हल, साइत पहिले भी इहाँ से ऊ कइएक बेर फोन करि चुकलइ हल। काहे कि तारबाबू बगैर कुछ पुछले, ओकर पुरान चिट्ठी से नंबर लेके श्रीनगर सैनिक छावनी के नंबर डायल करि देलकइ। हम बगल में दम साधि के ओकर एक-एक बात सुनेला कान लगा देलियइ हल। गोस्सा से ओकर देह हिल रहलइ हल आउ अंदर जइसे कोय आँधी हाहाकार करि रहलइ हल।

ओन्ने से फोन रिसीव होलइ आउ कोय अस्पताल कर्मी सैनिक परवेज के बोला लइलकइ हल। ओन्ने से की बात होलइ, हमरा मालूम नयँ, मगर एन्ने से रेसमा ओकरा धिक्कार रहलइ हल। पहिले तो जइसे बोली में मिसरी घोर देलकइ—'अस्सलाम अलइकुम परवेज!' मुदा तुरतहीं अवाज बदल देलकइ हल— 'सुनऽ हिए कि जुध बंद हो गेलइ, अब तो तोर मन ठीक हो जाय के चाही ।'

साइत ओन्ने से हर्ट में प्रोबलेम के बात ऊ कहलकइ हल। काहे कि ओकर बात ई लोकि लेलकइ हल—'हर्ट !...च...च...हमनी सबके तो डर लगि रहलइ हल कि भरले जवानी में तोरा उहइँ कोढ़ी तो नयँ फूटि गेलउ ? छी छी ! तूँ लड़ाई में मर जइते हल, तब जेत्ते दुख होयत हल, ओकरा से जादे दुख तोहर कायरपन से हे। लोग-बाग हमनी के राहो चलना दूभर करि देलक हे।' पल भर चुप रहिके रेसमा दोसर चोट कइलकइ हल—'जानऽ हीं परवेज, सीमा पर लड़इत अगर तूँ सहीद हो जइतहीं हल, तऽ जिगर के खून से तोहर कब्र पर दीया बारतिअउ हल। मुदा अब...अब डर से चूड़ी पेन्ह के साया में घुसि जायवला, डर से पैजामा में पेसाब करि देक्वेला तोरा सन कायर के, कसम काली पगड़ी वाला के, सौहर कहे में जहर खा लेवे के मन करऽ हउ । जानऽ हीं अम्मी की कहऽ हउ ? कहऽ हउ कि अगर ई जानतिए हल, तऽ परवेजवा के सौरिए घर में नोन चटा देतियइ हल। से एक बात पुछिअउ परवेज ? ई दुनिया में एक भी औरत हइ जेकरा बेइमान, चोर, बलत्कारी, घोटालेबाज, कातिल आउ....आउ तोरा सन कायर मरद के बेटा आउ सौहर कहइत गरान नयँ आवइ ?...इहे सेती एक बात कहइत ही परवेज कि तूँ मर काहे नयँ गेलें ? अब हमनी सब के सब तोहरा सन हिजड़ा से नफरत करऽ हिअउ ! थूह।'

आउ रिसीवर हाथ से छोड़ि के भद्द सन बइठइत रेसमा बुक्का फाड़ि के कुछ ई तरह से जार-बेजार होके रोवे लगलइ हल, जइसे अचक्के ऊ बेवा हो जाय के कचोट बोक से भरि गेल रहे।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'मोरचा' कहानी के का संदेस हे ?

   (ख) **सँकरी** के कछार पर कहानीकार शेखर के कउन मिललइ आउ ओकर का चित्र खिंचलन ?

   (ग) कहानीकार औरत के देख के का सोचे लगऽ हे ?

   (घ) 'मोरचा के नामे से हुनका हद्दस समा गेलइ'—ई के कह रहल हे आउ काहे ?

   (ङ) 'इहे एक बात कहइत ही परवेज कि तूँ मर काहे नञ् गेले ?'—ई के कह रहल हे आउ काहे ? अइसन बात सुनके तोर मनोदसा पर कउन परभाव पड़ल ?

   (च) 'हमरा काटऽ त खून नयँ'—ई बात के कह रहल हे आउ काहे ? कहानीकार के मनोदसा बतावऽ।

लिखित :

1. कहानीकार शेखर के परिचय पाँच पंक्ति में दऽ।
2. 'मोरचा' कहानी लिखे के उद्देस का हे ? तीन वाक्य में बतावऽ।
3. 'मोरचा' कहानी के नायिका कउन हे ? ओकर चरित्र के विसेसता बतावऽ।
4. ई. कहानी के माध्यम से कहानीकार जउन संदेस देवेला चाहऽ हथ, तीन वाक्य में बतावऽ ?
5. चिट्ठी पढ़ के फौजी के औरत पर कउन प्रभाव पड़ल ? एकरा समझा के लिखऽ।
6. नीचे लिखल वाक्य के व्याख्या करऽ :—

   सीमा पर लड़इत अगर तूँ सहीद हो जइतहीं हल, तऽ जिगर के खून से तोहर कब्र पर दीया बारतिअउ हल। मुदा अब, अब डर से चूड़ी पेन्ह के साया में घुस जायवला, डर से पैजामा में पेसाब कर देवेवला तोरा सन कायर के, कसम काली पगड़ी वाला के, सौहर कहे में जहर खा लेवे के मन करऽ हउ।

8. कहानी के तत्व के आधार पर 'मोरचा' कहानी के समीक्षा करऽ?

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल सबद से मिलते-जुलते सबद बतावऽ :

   (क) संकोच

   (ख) साहस

   (ग) घुरमुरिया

   (घ) चपचपायल चेहरा

   (ङ) सिन्दुरिया आम

2. कहानी पाठ से पाँच गो विसेसन चुन के ओकरा से वाक्य बनावऽ।

3. नीचे लिखल सबद में कउन-कउन समास हे :

   (क) ऊपर-नीचे

   (ख) धरमसाला

   (ग) बात-चीत

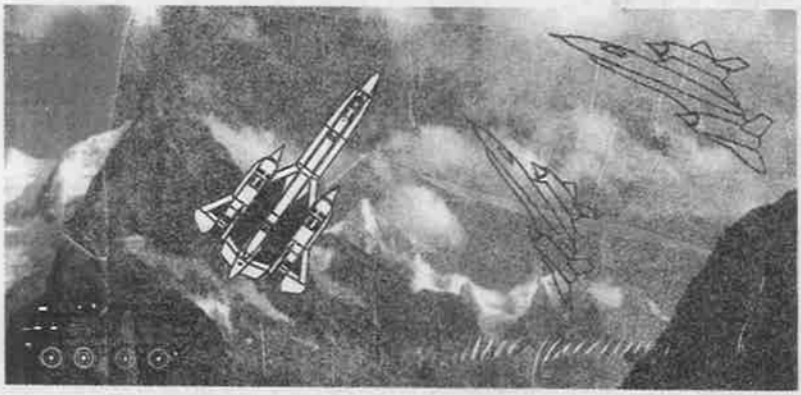
   (घ) सिक्ख-ईसाई

   (ङ) महाभारत

योग्यता-विस्तार :

1. देसभक्ति संबंधी कोई एगो दोसर कहानी सुनावऽ।

2. 'जुध' के पच्छ-बिपच्छ में वाद-विवाद प्रतियोगिता के आयोजन करऽ।





डॉ० दिलीप कुमार

जन्म तिथि : 2-1-1961

निवास : अछुआ, पालीगंज, पटना

सिच्छा : एम.ए., पी-एच. डी.

सम्प्रति : अध्यक्ष, मगही विभाग
पी०एन०के० कॉलेज, अछुआ, पालीगंज, पटना

परकासित पुस्तक :

1. कथा आलोक (मगही कहानी संकलन)
2. बदलल समाज (मगही नाटक)
3. निबंध भारती (मगही निबंध संकलन)
4. अभिनन्दन दल (मगही हाइकू संकलन)
5. रसायन के रस

सम्पादित पुस्तक :

6. कथा सौरभ (मगही कहानी संकलन)
7. कथा सागर (मगही कहानी संकलन)
8. मगही कथा सरोवर (कहानी संकलन)
9. साठी (मगही कविता संकलन)

पत्र-पत्रिका सम्पादन :

1. मगही तिमाही 'पाटलि' (सह सम्पादक)
2. मगही मासिक 'अलका मागधी' (सहायक सम्पादक)

मुखिया गाँव के परधान होवऽ हे। अब योग्य मुखिया कउन होयतन, ई तो उनकर कामे से पता चलत। ई कहानी में वर्तमान समय के राजनीति पर एगो करारा व्यंग्य कैल गेल हे। आजकल प्रजातंत्र में भी घुमा-फिरा के राजतंत्र के ही स्थापित करे के कोसिस कैल जाहे। ई व्यंग्य-कथा में ई देखावल गेल हे कि कइसे मुखिया जी चलाँकी से अप्पन व्यक्तिगत मत के जनमत बना दे हथ।

योग्य मुखिया

मुखिया पद के नोमिनेसन के दस दिन बाकी रह गेल हे। सउँसे गाँव में चुनाव के सरगर्मी बढ़ल हे। सब कोई के मुँह से एही अवाज निकलइत हे कि अबरी योग्य मुखिया के चुनाव होवे के चाही। रामाधार मिसिर अइसन हमनी के मुखिया न चाही। बाप रे ! जवाहर रोजगार योजना के कइसन लूट के रख लेलन। तीस लाख रुपइया गाँव के विकास लागी मिलल हल। अगर सही ढंग से काम होइत हल तब हमनी के गाँव तो स्वर्ग बन जाइत हल। बाकि कमीसन जादे खायल गेल आउ काम नाम ला भेल।

जब नोमिनेसन के एक दिन बाकी रह गेल तब मुखिया जी सउँसे गाँव के एगो बैठक बोला लेलन। बैठक में खचाखच लोग के देख के मुखिया जी दंग हलन। हम बड़ी बैठक बोलइली, बाकि अइसन भीड़ न देखली। बैठक रामाधार मिसिर के अध्यक्षता में सुरू भेल। मिसिर जी कहलन—'गाँव के तमाम जनता लोग ! तोहनी लोग के देन हे कि हम मुखिया बनके पाँच साल रहली। अगला चुनाव फिर होवे जा रहल हे। कल नोमिनेसन के अन्तिम दिन हे। अगर अपने लोग चाहम तब कल हम नोमिनेसन कर देम। अगर अपने लोग के राय न होयत, तब हम नोमिनेसन न करम। पाँच साल में हम्मर काम सराहनीय हे। गाँव के गली के ईंटाकरन, नली, इस्कूल के भवन, सब हमरे देन हे। हम एही चाहम कि अपने लोग कम से कम एक बार फिर हमरा मुखिया के पद पर बइठाईं, ताकि छूटल काम पूरा कर दीं। अबकी बार ग्राम-पंचायत भवन, स्वास्थ्य उपकेन्द्र के भवन आउ लइकन के खेले ला बढ़िया मैदान के जे हम्मर मन में सपना हे, ओकरा पूरा कर देम।' एही सब बात कहके मुखियाजी बइठ गेलन।

झगरू मियाँ से न रहल गेल। काहे कि झगरू मियाँ गलत बात बर्दास्त न करथ। ऊ मुँह पर सब बात कह दे हथ, चाहे तोरा दुःख लगवऽ चाहे सुख। झगरू मियाँ उठलन आउ कहे लगलन—'सुनीं मुखिया जी ! पाँच साल अपने मुखिया

रहली आउ फिर मुखिया बनेला बैठक बोलइली हे। अपने के काम आम जनता से छिपल न हे। जवाहर रोजगार योजना के पइसा लूट के रख लेली। अपने के कउन चीज के कमी हे। तइयो दिन-रात पइसा-पइसा कयले ही। अपने के सच्चाई आउ ईमानदारी से काम करे के चाहऽ हल। बाकि अइसन अपने न कइली। गली के ईंटा पाँच साल के पहिलहीं उखड़ गेल। नली के दसा अपने देखइते ही। इस्कूल के केंवाड़ी आउ खिड़की के पल्ला उलह के खतम हो गेल। छत भगवान के नाम पर टिकल हे। घोटाला करे में मुखियाजी, अपने सबसे आगे ही। गाँव के जनता के अपने मूर्ख बना के रखले ही। अपने के सब बात जनता समझ गेल हे। भलाई एही में हे कि अगिला उम्मीदवार अपने मत बनूँ। दूसर इंसान के मौका देवल जाए, जे समाज सेवा लागी अपना के समर्पित कर देलक हे।'

झगरू मियाँ के बात सुनके मुखियाजी अप्पन सफाई आम जनता के सामने रखलन। बाकि सफाई सुने लागी कोई तइयार न हल। एक्के गो अवाज आवइत हल कि हमनी के मुखिया रामाधार मिसिर न रहतन। मुखिया रामाधार मिसिर के खूब लेथारल गेल। बेचारे पानी-पानी हो गेलन। बाकि मन में सोचइत हलन कि चाहे जे होवे, जइसे होवे, मुखिया हमहीं बनीं। काहेकि जबसे रोजगार योजना सुरू हो गेल, तबसे मुखिअई आय के स्रोत हो गेल। आम जनता के बुड़बक बना देना तो हम्मर बायाँ हाथ के खेल हे। गाली-गलौज सहके पइसा कमा लेना आज के चलँकवन के खूबी हे। आम जनता हमरा मुखिया बनावे के पक्ष में न हे घर के मुखिया घरे में रहे के चाहीं। मने-मने एही सोचइत हथ मुखियाजी।

टीपन सिंह, नवल सिंह, भुनेश्वर यादव आउ मिथिलेश ठाकुर अप्पन-अप्पन भासा में मुखियाजी के खूब लेथारलन। बेचारे पानी-पानी हो गेलन, बाकि मुखिया बनेला जिद ठानले हलन।

खूब झड़इया के बाद मुखियाजी नीचे मुँह करके चुपचाप बइठल हलन। उनकर दसा देख के सरदार जी कहलन—'गाँव के भाई लोग ! आखिर में कोई के मुखिया ला समर्थन तो करले न जायत ?'

बात काटइत रामदीन सिंह कहलन— 'सरदार जी ! हमनी मुखियाजी के कोई सर्त पर वोट न देम। हमनी के मुखिया चोर-चुहाड़ न रहत। गरीब घर के ईमानदार इंसान आउ इज्जतदार रहत। जे आम जनता के चैन से रहे देत, भाई-भतीजावाद के नारा बुलन्द न करत, जात-पात आउ छुआछूत के भेदभाव न

रक्खत, ओही हमनी के मुखिया रहत। सरदार जी ! रामाधार मिसिर के मुखिया बनाके देख लेली। इनका से गाँव के कोई इन्सान खुस न हे। छुआछूत, जात-पात, भाई-भतीजावाद आउ घोटाला करे के भाव इनका में भरल पड़ल हे।'

रामदीन सिंह के भासन सुनके मुखियाजी के तरवा के लहर कपार पर चढ़ गेल। मने-मन सोचे लगलन कि एकर बदला मौका अयला पर जरूर लेम। काहे कि ई जरुरत से जादे बोलऽ हे। आम जनता के भड़कावे में एकर हाथ सबसे जादे रहऽ हे।

सरदार जी उठ के कहलन—'मुखिया जो के ईमानदारी के परिचय एक बार जरूर लेवल जाय। ई मामले में नऽ कि इनका मुखिया बनावल जाय। मुखियाजी, अपने के ई भार देवल जाइत हे कि अगला मुखिया हमनी के कउन होयत, एकरा ला कम से कम दू गो नाम अपने दीं। बाकि एगो सर्त्त हे कि भाई-भतीजावाद अपने न करम।'

सरदार जी के बात सुनके आम जनता कहलक—'ठीक हे, हमनी के अगला योग्य मुखिया के उम्मीदवार कउन रहत, से मुखिये जी तय करतन।'

रामाधार मिसिर खड़ा भेलन आउ आम जनता के सम्बोधन करइत कहलन – 'भाई लोग ! बड़ खुशी के बात हे कि अगला मुखिया के उम्मीदवार कउन रहत, ई हमरा पर लोग सौंप देलऽ हे। साथे-साथे एगो सर्त्त भी हे भाई-भतीजावाद न करे के। हम अपने लोग के बात मान लेली, बाकि अपने लोग से हम ई जानल चाहइत ही कि भाई-भतीजावाद न करके जब योग्य उम्मीदवार अपने लोग के सामने रक्खम, तब ओकर विरोध अपने लोग न न करम ?'

चारो तरफ से अवाज भेल कि हमनी विरोध न करम, ओकरे वोट देम। हमनी आम जनता वादा दे रहली हे।

रामाधार मिसिर कुछ देर तक मौन रहलन। फिर विवेक से काम निकालेलन। एगो कोना में जाके दूगो पुरजा पर योग्य उम्मीदवार के नाम लिख देलन आउ आम जनता के सामने मोड़ के रख देलन, फिर कड़क के कहलन—'गाँव के तमाम लोग ! हम भाई-भतीजावाद न कइली हे। अपने लोग के कहनानुसार हम दू गो पुरजा पर दुर्बल आउ समाज में उपेक्षित व्यक्ति के नाम लिख देली हे।' मुखियाजी के मुँह से अइसन बात सुनके लोग ताली बजावे लगलन।

सरदार जी दुन्नो पुरजा के अपने हाथ में रख के जोर-जोर से हिला के मिला देलन। फिर एगो गरीब लइका के बोलाके ओकरा में से एगो पुरजा निकाले ला कहलन।

जइसहीं लइका लॉटरी वला पुरजा सरदार जी के हाथ में रखलक, ऊ ओकरा जल्दी-जल्दी खोल के पढ़लन। पुरजा पर लिखल हल राधा देवी। जइसहीं सरदार जी पढ़लन कि चारो तरफ से हल्ला भेल कि ई तो घोर बेईमानी हे।

मुखियाजी खड़ा होके कहलन—'अपने लोग वादा से पीछे मत हटीं। अपने लोग कहली हल कि ऊ व्यक्ति दुर्बल आउ कमजोर वर्ग के होवे के चाहीं। अपनहीं लोग बताईं कि महिला से बढ़के दुर्बल आउ कमजोर ई देस में कउन हे ? राधा देवी दुर्बल आउ कमजोर महिला हे।'

मुखियाजी के बात सुनके रामदीन सिंह कहलन—'बाकि अपने घोर बेईमानी कइली हे। अपने कहली हल कि हम भाई-भतीजावाद न करम ।'

मुखियाजी तुरन्त जवाब देलन—'राधा देवी हम्मर भाई आउ भतीजा न हथ।'

रामदीन उठ के तड़ाक से कहलन—'का महाराज ! आउ कहावे ला मरइत हऽ, ऊ अपनहीं के न औरत हथन ?'

मुखियाजी फिर कहलन—भाई लोग ! अपने वादा से मुकरीं मत। अपने लोग कहली हल कि भाई-भतीजा न होवे के चाहीं। अपने लोग ई कहाँ कहली हल कि पत्नी न होवे के चाहीं।'

गाँव के आम जनता फेर में पड़ गेलन। फिर लइका से दुसरका पुरजा निकाले ला कहल गेल। गाँव के लोग ई विचार पर अड़ल हलन कि पत्नी के नाम पर विरोध करवा देम। फिर लचार होके दुसरके व्यक्ति उम्मीदवार हो जायत। गाँव के तरफ से अवाज आयल कि दुसरका पुरजा पढ़ल जाय। सरदारजी दुसरका पुरजा पढ़लन—ओकरा पर लिखल हल अनुराधा देवी।

नाम सुनइते गाँव के आम जनता के बोलिये बन्द हो गेल, काहे कि अनुराधा देवी मुखियाजी के दुसरकी पत्नी हलन।

बैठक से उठइत-उठइत रामाधार मिसिर आम जनता से कहलन—'अपने लोग के कहनानुसार मुखिया पद के योग्य उम्मीदवार राधा देवी भेलन जे अपने लोग के सब सर्त्त पूरा करइत हथ। अपने लोग अप्पन वादा निभाईं आउ योग्य मुखिया के जिताईं।'

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) कहानीकार दिलीप कुमार के परिचय चार वाक्य में दऽ ।

   (ख) रामाधार मिसिर मुखिया के रूप में गाँव में कउन-कउन काम करके देखा देलन ?

   (ग) झगरू मियाँ रामाधार मिसिर के का जवाब देलन ?

   (घ) झगरू मियाँ के बात सुनके रामाधार मिसिर का सफाई देलन ?

   (ङ) रामदीन मिटिंग में जे कहलन, ऊ आज के समय में केतना उचित हे ? पाँच वाक्य में तर्क देके समझावऽ।

लिखित :

1. सरदार जी के कथन तोरा कइसन लगल ? तीन वाक्य में समझावऽ।
2. रामाधार मिसिर मौन काहे रहलन ?
3. राधा देवी के दू गो बिसेसता बतावऽ ।
4. तोर विचार से मुखिया में कउन-कउन गुन होवे के चाहीं ?
5. रामाधार मिसिर के चरित्र-चित्रन करऽ !
6. ई कहानी में आउ कउन-कउन मुख्य पात्र हे ? ओकरा बारे में एक-एक वाक्य लिखऽ !
7. सप्रसंग व्याख्या करऽ :—

   हमनी के मुखिया चोर-चुहाड़ न रहतन। मुखिया गरीब घर के इंसान आउ इज्जतदार रहत जे आम जनता के चैन से रहे देत।

भासा-अध्ययन :

1. पाठ से पाँच गो तत्सम सब्द चुन के लिखऽ।
2. ई सब मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करऽ :—
   पानी-पानी होना, चैन से रहना, तरवा के लहर कपार पर चढ़ना, बोलती बन्द होना, घोटाला करना

योग्यता-विस्तार :

1. अगर तूँ मुखिया बन जयबऽ, तब समाज में परिवर्तन लावेला कउन-कउन काम करके देखयबऽ ?
2. आज पंचायती राज सफल हे कि फेल ? समझा के लिखऽ।
3. देस के विकास में पंचायत के का भूमिका हो सकऽ हे ? एकरा पर लेख लिखऽ।
4. कहानी के सिल्प के आधार पर 'योग्य मुखिया' के समीक्षा करऽ !

सब्दार्थ :

नोमिनेसन	— नाम देना
उलह गेल	— सूख के टेढ़ा हो गेल
समर्पित	— सौंपना
लेथारल गेल	— लजावल गेल
कहनानुसार	— कहे के मोताबिक
उपेक्षित	— गदानल न गेल / बिना ध्यान के
सौभाग्यसाली	— अच्छा भाग्यवाला
दुर्बल	— कमजोर

●●●



डॉ० राकेश कुमार सिन्हा 'रवि'

जन्म तिथि : 18-01-1970

निवास : अखिलेशायन, गोदावरी, भैरो स्थान, गया

सिच्छा : एम०ए०, पी-एच०डी०,डी०जे०

परकासित पुस्तक :

1. इतिहास के ऐना में मगध
2. धरोहर मगध के (खंड–1)
3. धरोहर मगध के (खंड–2)
4. श्री भैरोस्थान दिग्दर्शिका
5. दास्तान-ए-गया
6. पंचतंत्र के कहानी

ई निबंध में मसहूर पर्यटन स्थल देव के सूरज-मंदिर के बारे में जानकारी देवल गेल हे। ई मंदिर के स्थापत्य कला, बनावट आउ सुन्दरता के बरनन तो हइये हे एकरा में, एकर ऐतिहासिक आउ पौरानिक पृस्ठभूमि भी बतावल गेल हे। एकरा बारे में प्रचलित लोक-कथा आउ वैज्ञानिक दृस्टिकोन, दुन्नो के जानकारी देवल गेल हे।

देव के सूरज-मंदिर

जब कभी मगध के चरचा होवऽ हे, तऽ देव के सूरज-मंदिर के नाम अपने आप उभर के सामने आ जाहे। कोई जमाना में मगध के राजवंस स्थापत्व आउ सिल्पकला में जे उन्नति के प्राप्त करलन हल, ओकरे सफल परिनाम हे देव के सूरज-मंदिर ज़ेकर महिमा आउ नाम सउँसे देस में हे।

मगध के भूमि सूरज पूजन के पुरान जगह हे आउ एकर सास्त्रोक्त परमान भी हे। एही चलते मगध में सूरज-मंदिर के भरमार हे, बाकि जहाँ के सूरज-मंदिर के सबसे जादे महातम हे, ऊ हे देव के सूरज-मंदिर। औरंगाबाद जिला मुख्यालय से 16 किलोमीटर दूर पर बसल देव प्रखण्ड के देव राजवंस के किला के बगल में स्थापित ई मंदिर परिसर में साल में दू बेर अदमी सबके जमघट लगऽ हे–पहिला चइती छठ में आउ दूसर बेर कतकी छठ में। धरम-करम में बिस्वास रखे वालन ई मानऽ हथ कि हिआँ सब्भे के मनोकामना जरूरे पूरा होवऽ हे।

ई मंदिर के दुआरी पर लगल एगो सिलालेख बतावऽ हे कि बारह लाख सोलह हजार बरस त्रेतायुग बीत गेला के बाद माघ सुक्ल पंचमी गुरुवार के राजा इला के बेटा एल ई मंदिर के निरमान सुरू करवयलन। एगो कथा हे कि राजा एल कुस्ठ रोग से पीड़ित हलन आउ उनकर हियें के कुण्ड के पानी से उद्धार होयल। एही से हियाँ के कुण्ड (सूरज-कुण्ड) भी बड़ महात्तम के हे।

जानकारी मिलऽ हे कि मगध में मग ब्राह्मण लागी सिल्पी श्री विस्वकर्मा रातो-रात जे तीन गो मंदिर बनयलन हल, ओकरा में देव के मंदिर सबसे जादे आकर्सक, भव्य आउ विसाल हे, बाकी दूगो 'उमगा' आउ 'देवकुण्ड' के मंदिर बतावल जाहे।

आज जे हमनी देव के सूरज-मंदिर देखइत ही, ऊ कोई 1000 बरिस पुरान हे जेकर नव-संस्कार उमगा के सूरज मंदिर के बनावेवाला राजा भैरवेन्द्र 1450 ई० के लगभग करवैलन। ई मंदिर से जुड़ल सबसे अलग जे बात हे, ऊ ई कि एकर दुआरी पूरब भर न होके पच्छिम भर के हे। काहे ? एकरा में बड़ी मत-मतांतर हे। कहल जाहे कि एक बेर औरंगजेब के सेनापति काला पहाड़ हिआँ अयलन आउ मंदिर के धन-दौलत लूट के एकर विनास करेला चाहलन। जब पुजारी आउ आस-पास के अदमी मना कैलन, तब ऊ कहलन कि अगर ई देओता में ताकत हे, तऽ दुआरी राते-रात पच्छिम हो जाए। बस रातो-रात भयंकर गड़गड़ाहट के साथ दुआरी पलट गेल। आजो हिआँ जाए के रूख पच्छिमे दन्ने से हे बाकि इतिहासकार लोग के निगाह में देस-दुनिया में उच्च प्रतिस्ठा पावे लेल ई मंदिर के दुआरी पच्छिम में बनावल गेल। सच का हे से कहना मुस्किल हे। अइसे मगध में अइसन दू-चार गो मंदिर हे जेकर रुख पच्छिम दन्ने हे। एकरा में माधवपुर (टिकारी) के देवीथान परमुख हे जेकर आवे–जाए के रस्ता पच्छिम दन्ने से हे।

ई मंदिर के सामने के देवाल पर भगवान गणेश के मुरती हे जेकर ऊपर मुँह फाड़ले सिंह आउ दायाँ–बायाँ भी सिंह बनल हे। अन्दर से मंदिर तीन भाग में बँटल

हे जेकर तिसरका भाग में सूरज भगवान के तीनों रूप के मुरती करिया चमकदार पत्थर के बनल हे। लगभग 100 फीट ऊँचा ई मंदिर के निरमान बिना गारा सिमेंट के आयताकार, त्रिभुजाकार, गोलाकार आउ जहाँ-तहाँ वर्गाकार कटल पत्थर के जोड़ के बनावल गेल हे।

कुछ लोग देव मंदिर के उड़ीसा सैली के मंदिर, तऽ कुछ 'महाबोधि', तऽ कोई 'कोचेस्वर महादेव' मंदिर के निरमान पद्धति पर आधारित बतावऽ हथ, जबकि सच्चाई ई हे कि सउँसे देस में देव के सूरज मंदिर अनूठा हे जेकरा बनावे में उड़ीसा सैली, मगध सैली आउ बौद्ध मंदिर के मिलल रूप परभावी रहल हे।

ई मंदिर के कला सैली से परभावित होके हिआँ महान् भारतीय यायावर राहुल सांकृत्यायन अयलन हल। मंदिर के चहारदीवारी में चुनल पुरान-पुरान मुरती, बड़गर हवनकुण्ड आउ पत्थर के फलक एकर प्राचीनता के मूक गवाह हे। जी.टी. रोड पर 1983 में 'देवद्वार' बनल हल आउ 1986 से 'देव सूरज मंदिर धार्मिक न्यास समिति' हिआँ के विकास लेल लगल हे। अइसे पर्यटन विभाग के काम भी सराहे जुकुर हे, जे हिआँ हरेक साल 'देव महोत्सव' के आयोजन करके अच्छा काम करइत हे।

सच्चो ई मंदिर मगध के सांस्कृतिक विरासत के एगो अनूठा गौरव गाथा हे। इहाँ पहुँचतहीं लगऽ हे कि छठ के गीत कान में गूँज रहल हे आउ सूरज देव अकास में खड़ा होके सुन रहलन हे—

छठ गीत

सात कोठरिया जी दीनानाथ, सोवरन केवाड़,
लिपिये-पोतिये दीनानाथ, चउकठ धैले ठाड़।
सब्भे के डलिअवा जी दीनानाथ, कैले विचार,
हमरो डलिअवा जी दीनानाथ, धैले तमाये।
सासू मोरा मारे दीनानाथ, ननद नोचे गाल,
हे निर्धन पुरुखवा जी दीनानाथ, धरे तरुआर।
चुप रहूँ, चुप रहूँ बाँझी, पटोरवा पोछऽ लोर,
तोहरो के देबो बाँझी, सौदागर अइसन पूत।
सासू तोरा दुलरइतो, ननदिया माँगतो दान,
निर्धन पुरुसवा गे बाँझी, हिरदा लेतो लगाय।

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) देव-मंदिर के सूरज कुंड के महातम बतावऽ।
   (ख) देव के सूरज-मंदिर कहाँ पर बनल हे?
   (ग) देव में भक्त लोग के जमघट कब-कब लगऽ हे?
   (घ) सिलालेख के अनुसार देव के सूरज-मंदिर के निरमान के काल बतावऽ।
   (ङ) सूरज मंदिर के निर्मान कउन सुरू करवैलन हल?
   (च) एगो दोसर 'छठ-गीत' गाके किलास में सुनावऽ।

लिखित :

1. राकेश कुमार सिन्हा 'रवि' के परिचय संक्षेप में बतावऽ।
2. विस्वकर्मा जी रातो-रात कउन-कउन तीन गो मंदिर बनयलन हल।
3. 'रातो-रात पूरब के दुआरी पच्छिम हो गेल।' ई कथा के विस्तार से बतावऽ।
4. गणेश जी के मंदिर में कउन-कउन आकार के पत्थर लगल हे ?
5. देव-मंदिर के निरमान कउन कलात्मक सैली में करल गेल हे ?
6. ई मंदिर के प्राचीनता के गवाही कउन-कउन वस्तु दे रहल हे ?
7. देवद्वार के निरमान कब होयल ?
8. पर्यटन विभाग के योगदान पर प्रकास डालऽ।
9. संदर्भ सहित व्याख्या करऽ :
   सच्चो ई मन्दिर मगध के सांस्कृतिक विरासत के एगो अनूठा गौरव-गाथा हे।
10. नीचे लिखल वाक्य के आसय बतावऽ:
    बाकि इतिहासकार लोग के निगाह में देस दुनिया में उच्च प्रतिस्ठा पावे लेल ई मंदिर के दुआरी पच्छिम बनावल गेल।
11. पाठ में आयल 'छठ-गीत' के भाव बतलावऽ।

भासा-अध्ययन :

1. स्थापत्यकला आउ सिल्प कला के अलावे आउ कउन-कउन कला हे?

2. मन्दिर के निरमान आउ बेवस्था से जुड़ल पाँच गो व्यक्ति आउ संस्था के नाम बतावऽ

3. 'जाए के रस्ता पच्छिम दन्ने से हे'— वाक्य के विस्तार करऽ।

4. नीचे लिखल सबद के विस्तार से समझावऽ :—
यायावर, महाबोधि, औरंगजेब, गणेश, त्रेतायुग, विस्वकर्मा, राजवंस, धार्मिक न्यास समिति, देव-महोत्सव

योग्यता-विस्तार :

1. बतावऽ कि इगरहवाँ किलास के छात्र या छात्रा लोग मेला में सेवा सिविर लगाके कउन-कउन सेवा कर सकऽ हथ।

2. अइसने मन्दिर के बरनन करइत बिदेस में पढ़इत अप्पन दोस्त के एगो चिट्ठी लिखऽ।

3. मन्दिर के बारे में जे दन्त कथा हे, आज ऊ केतना सच मानल जायत आउ ओकरा बारे में वैज्ञानिक मत का हो सकऽ हे ?

सब्दार्थ :

उन्नति	—	बढ़न्ती
परिनाम	—	फल
भरमार	—	बहुत जादे
जमघट	—	भीड़/मेला
कुंड	—	तलाव
पूरब भर	—	पूरब दिसा / पूरब तरफ
मुँह फाड़ले	—	मुँह खोल के
यायावर	—	पर्यटक / घुमक्कड़
अनूठा	—	अतुलनीय
गाथा	—	कहानी